तालाब में डूबी छह लड़कियाँ

विष्णु नागर

तालाब में डूबी छह लड़कियाँ

विष्णु नागर

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: जुलाई, 2025

© विष्णु नागर

डॉ० दुर्गाप्रसाद झाला

स्व० जयप्रकाश आर्य

श्रीराम जोशी

नरेन्द्र गौड़

ब्रजकिशोर शर्मा

को

शाजापुर के दिनों की स्मृति में

विष्णु नागर की कविता क्या-क्या करती है अगर इसकी एक फेहरिस्त बनायें तो जो चीज सबसे ऊपर होगी वह यही कि वह आज की आपाधापी में कई चीजों (जो दरअसल उसी की हैं) से आँख चुरा कर भागे व्यक्ति को 'पकड़' लेती है : कभी पीछे से एक दोस्त की तरह, कभी किसी दुर्घटना के बदहवास दर्शक की तरह जो राह में आ गये किसी भी व्यक्ति से उसका बयान कर देना चाहता है, कभी किसी परिचित या अपरिचित हमसफर की तरह और कभी निरा बतियाने की इच्छा से। सारी बातचीत वह एक सादी, बे-बनाव भाषा में करती है।

विष्णु नागर की कविता का एक और गुण भी याद किया जायेगा, जो समकालीन कविता का भी एक अनिवार्य गुण है- कविता के मुखस्थ या कंठस्थ हो जाने की जगह (या उसके साथ) उसका निकटस्थ हो जाना।

अनुक्रम

तालाब में डूबी छह लड़कियाँ	8
महापण्डित	10
हम सब	12
मैंने सोचा	13
हवा में	14
इस बरस	15
मौका	16
लड़की ने नहाया	17
जब भी...	18
हर कविता	19
डालियों में	20
उसके सोने में है व्यथा	21
समय	22
हरी चिड़िया का स्वप्न	23
वक्त होता जा रहा है	24
युद्धभूमि	25
मैं अपना अन्त नहीं देखता	26
लड़के की मौत	28

जवान औरत 29
वह जवानी में भी रोयेगा 31
मैं फिर कहता हूँ चिड़िया 32
अन्तिम वृक्ष 33
लड़का 34
माँ 35
दूसरे हथियार चुप थे 36
वक्त 37
लड़की 38
डाली-डाली 39
घर 40
दर्पण 41
उधर मेरी बच्ची है 42
हरा पहाड़ 43
शिव 44
सोहन- मोहन 46
फल 47
झण्डा-गीत 48
रात 49

क्षमा कीजिए	50
सवारी गाड़ी	51
साबुन	52
नदी और बच्चा	53
छोटा लड़का	54
दुनिया है कागज पे रची	55
जिरह में	56
पेड़	57
माखन	58
जंगल ही क्यों नहीं हैं	59
बरस रहा है पानी	60
तुम्हारा यह खेल	61
साहस	62
सुलेमान	63
अपना आदमी	65
रिआया	66
पहाड़	67
इतना वक्त	68
यह कविता	70

हुज़ूर 72

उनके फूल 74

वह बहुत दूर 76

दयाराम बा 77

वह 80

चाँद पर 82

कोई नहीं है 85

मर गये वे 86

दुश्मन 87

देह 93

राजा की सवारी 95

एक कमरा 96

बहिन 97

भाई की चिट्ठी 99

तालाब में डूबी छह लड़कियाँ

तालाब में डूबी

छह लड़कियाँ

जवान थीं जवान

उनके भरे हुए स्तन थे

उनके शरीर को छूते

करण्ट दौड़ जाता था

वे गोल-मटोल

जादू की पुतलियाँ थीं

उन्हें मरे दो बरस हो जायेंगे

पाँच और आठ और साठ बरस हो जायेंगे

भरी-पूरी

जवान लड़कियों की मौत की

एक शताब्दी बीत जायेगी

ये लड़कियाँ

ऐसे ही नहीं बीतने देंगी

ये शताब्दियाँ

कल ही किसी के

सपने में नंगी होकर आयेंगी

किसी के हाथ में

दे देंगी अपना हाथ

किसी की तरफ

आँखें उठाकर भी नहीं देखेंगी

छह लड़कियाँ

छह हजार होकर आयेंगी

और तालाब में डूबते-डूबते

नाक में दम कर देंगी

छह लड़कियाँ

चिड़िया बनकर आयेंगी

हरदम तिनके गिराती रहेंगी

छह लड़कियों के मरने से

कोई यह न समझे

कि उन्हें इतनी जल्दी जीत लिया गया है।